eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

युवा पीढ़ी के दायित्वः सोशल मीडिया एवं शिक्षा के संदर्भ में

डॉ. रियंका सिंह[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षा विभाग वी0एम0एल0जी0 कॉलेज गाजियाबाद, उ0प्र0

Received: 20 July 2025, Accepted: 25 July 2025, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2025

Abstract

किसी देश की मौलिक प्रगति का निर्धारण, उसका सुशिक्षित और शिक्षित युवा वर्ग ही करता है। आज देश की सीमाएँ विदेशी षड्यंत्रों और आतंकवाद से त्रस्त हैं। देश की अखंडता को चुनौतियां मिल रही हैं। ऐसे समय में युवा वर्ग का दायित्व बहुत बढ़ गया है। चरित्रवान, निर्भीक और जागरूक युवा संगठित रूप से आगे आकर आज समाज में सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव, अशिक्षा,सांस्कृतिक ह्रास,व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण तथा अन्य कई सामाजिक विकृतियों से देशवासियों की रक्षा कर सकते हैं। राजनीति में युवा वर्ग की विशेष उपादेयता है। युवा उत्साह और ऊर्जा से लबरेज होता है और अपने इन्हीं गुणों से वह राजनीति में भी गति और गरिमा लाता है। राजनीति की गतिशीलता के लिए यह जरूरी है कि इसमें युवा वर्ग की भागीदारी बढ़े। राजनीति में युवा वर्ग की सक्रियता गुणात्मक बदलाव लाती है। आशा और स्फूर्ति का संचार करती है। युवा सोशल मीडिया के जरिए देश के विभिन्न आयामों के प्रति अपनी राय जाहिर कर रहे हैं।

मुख्य शब्द– सीमाएँ, सोशल मीडिया, सामाजिक विकृतियों, शोषण, गुणात्मक बदलाव।

Introduction

युवा पीढ़ी के दायित्व बहुत बढ़ गए हैं क्योकि भारत देश तभी आगे जा सकता हैं जब शिक्षा,सांस्कृतिक विरासत, सोशल मीडिया का उपयोग प्रभावी ढंग से हो। शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार, समाचार पत्रों की व्यापक संख्या तथा जनशिक्षा एवं जनदर्शन की विभिन्न साधन होने के बाद भी आवश्यक है।

क्या आधुनिक युग प्रौद्योगिकी, समाजीकरण का युग है?

टेलीविजन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट ने एक नई क्रांति पैदा कर दी है इसके कारण दुनिया सही मायने में विश्वबंधुत्व की कल्पना को साकार होते हुए देखती है। पूरा ब्रम्हाण्ड पूरी दुनिया सिमटकर एक धरातल पर आ गई हैं।

शिक्षा सबसे सशक्त हथियार है, जिससे दुनिया को बदला जा सकता है– नेल्सन मंडेला

किसी भी राज्य एवं देश की आधार शिला युवा होते है। युवाओं पर ही राज्य के विकास और भविश्य की संभावनाए निर्भर होती है। उन्हें भविश्य का कर्णधार भी माना गया है। वर्तमान परिदृश्य में युवाओं की सक्रीय भूमिका से सकारात्मक परिणाम सामने आये है। युवा जोश और उत्साह को सही दिशा देकर राज्य विकास की गति बढ़ाई जा सकती है। युवा विभिन्न क्षेत्रों में पूरे देश में राज्यों की एक अलग पहचान बना रहे है। युवाओं के इन उल्लेखनीय कार्यों के फलस्वरूप छ.ग. अपने साथ गठित अन्य राज्यों से विकास की दौड़ में आगे निकल गया है ।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

वर्तमान में मिडिया से जुड़े सर्वाधिक जन युवा है । आज यह बात कही जा रही है कि पहले के पिछड़े हुए देश वे थे, जहाँ औद्योगिक क्रांति नहीं हुई थी और भविश्य में पिछड़े हुए देश वे होंगे जो संचार क्रांति से अछूते रह जाएगें।

सकारात्मक प्रभावः–

इससे एक विश्व एक गांव की कल्पना साकार हो उठी है।

लोगों के बीच सांस्कृतिक एवं भौगोलिक दूरी घटी है।

नकारात्मक प्रभावः–

इससे भौतिकतावाद को बढ़ावा मिलता है।

नव साम्राज्यवाद अपना पैर पसार रहा है।

आत्म केन्द्रित एवं स्वार्थी प्रवृत्ति का प्रचलन बढ़ रहा है।

कम्प्यूटर के माध्यम से नये अपराध सामने आये है (साइबर क्राइम)

वैश्वीकरण और शहरीकरण के प्रभावः 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण के बाद से भारत में वैश्वीकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया तेज हुई, जिसका प्रभाव युवाओं की सोच और दृष्टिकोण पर व्यापक रूप से देखा गया। नए आर्थिक अवसरों ने युवाओं को परंपरागत दृष्टिकोण से हटकर करियर को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा के नए अवसर, विशेषकर पेशेवर शिक्षा, और विदेशी विचारधाराओं का प्रभाव युवाओं को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनने की दिशा में प्रेरित करने लगा। शहरीकरण के कारण छोटे शहरों और गांवों से युवाओं का बड़े शहरों की ओर पलायन बढ़ा, जहां उन्हें एक नए तरह के जीवन और सोच का सामना करना पड़ा। यह बदलाव न केवल उनकी करियर संबंधी आकांक्षाओं को प्रभावित करता है, बल्कि परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति उनके दृष्टिकोण को भी नया रूप देता है। संयुक्त परिवार की जगह अब एकल परिवारों ने ले ली है, और युवाओं की प्राथमिकताएँ व्यक्तिगत विकास और करियर में सफलता पर केंद्रित हो गई हैं।

तकनीकी उन्नति और डिजिटल युगः 21वीं सदी में तकनीकी क्रांति और इंटरनेट की पहुंच ने युवाओं के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। सोशल मीडिया, ई–कॉमर्स, और डिजिटल प्लेटफॉर्म के आगमन ने न केवल उनके रोजमर्रा के जीवन को बदल दिया है, बल्कि उनकी सोच और दृष्टिकोण पर भी गहरा प्रभाव डाला है। अब युवा अपने करियर के साथ–साथ सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी तकनीक के माध्यम से संतुलित करने का प्रयास कर रहे हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने युवाओं को वैश्विक स्तर पर जुड़ने, अपनी सोच को साझा करने, और नए विचारों को अपनाने का अवसर प्रदान किया है। इसके साथ ही, इन प्लेटफार्मों ने करियर विकल्पों का दायरा भी बढ़ाया है, जिससे पारंपरिक नौकरी के विचार से हटकर युवा स्टार्टअप्स, फ्रीलांसिंग, और क्रिएटिव इंडस्ट्रीज में अपनी पहचान बना रहे हैं। हालांकि, यह बदलाव उनकी पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को भी प्रभावित करता है, क्योंकि युवाओं की प्राथमिकताएँ अब तेजी से बदलती हुई डिजिटल दुनिया के साथ जुड़ी हुई हैं।

शिक्षा और पेशेवर आकांक्षाओं में बदलावः शिक्षा ने हमेशा से सामाजिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया है, और भारतीय युवाओं के बदलते दृष्टिकोण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उच्च शिक्षा और पेशेवर शिक्षा के प्रति बढ़ते झुकाव ने युवाओं को नए अवसरों की ओर आकर्षित किया है। पहले जहां करियर के

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

रूप में सरकारी नौकरी या पारिवारिक व्यवसाय को प्राथमिकता दी जाती थी, अब युवा निजी क्षेत्रों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों, और उद्यमशीलता की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं।

इसके साथ ही, शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता ने युवाओं में करियर के प्रति गंभीरता और समाज में अपनी पहचान बनाने की चाह को और अधिक मजबूत किया है। युवा अब केवल परिवार या समाज की अपेक्षाओं के आधार पर करियर नहीं चुन रहे, बल्कि वे अपनी व्यक्तिगत रुचियों और क्षमताओं के आधार पर करियर का चयन कर रहे हैं। यह बदलाव उनके पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति दृष्टिकोण को भी प्रभावित करता है, क्योंकि अब वे अपने निर्णयों में अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर हो रहे हैं।

परिवार के प्रति बदलता दृष्टिकोणः पारंपरिक भारतीय समाज में परिवार एक महत्वपूर्ण इकाई रहा है, जहां बच्चों से उम्मीद की जाती थी कि वे अपने माता–पिता और अन्य बुजुर्गों की देखभाल करेंगे। हालांकि, आधुनिक युवाओं में इस दृष्टिकोण में बदलाव देखा जा रहा है। अब युवा अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और करियर को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन इसके बावजूद वे अपने परिवार से जुड़े रहने और सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने की कोशिश करते हैं। परिवार के प्रति बदलते दृष्टिकोण का एक प्रमुख कारण आधुनिक जीवनशैली और शहरों में बढ़ती व्यस्तता है। शहरी जीवन के दबाव, काम की जटिलताएं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति बढ़ती जागरूकता ने युवाओं को एकल परिवार की ओर झुकाव दिया है। हालांकि, वे अपने माता–पिता और परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हैं और उन्हें निभाने के लिए नए तरीके तलाश रहे हैं, जैसे कि वित्तीय सहायता, डिजिटल माध्यमों से संपर्क, और समय–समय पर व्यक्तिगत उपस्थिति सकारात्मक बदलाव ला रही है। सामाजिक न्याय के लिए आवाज उठाने से नहीं हिचकिचाती, और वे विभिन्न आंदोलनों और अभियानों में शामिल होकर अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

आधुनिक मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के प्रति दृष्टिकोणः – आधुनिक मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म का सामाजिक दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, और अन्य डिजिटल चौनलों के माध्यम से सूचना का त्वरित प्रसार और व्यापक पहुंच संभव हो पाई है, जिसने समाज में विचारधाराओं और मान्यताओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय युवाओं पर इन प्लेटफॉर्मों का प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि यह पीढ़ी डिजिटल युग में बड़ी हुई है और इन प्लेटफॉर्मों का सक्रिय उपयोग करती है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने युवाओं को विश्वभर में हो रही घटनाओं और विचारों के बारे में जानकारी हासिल करने में मदद की है। वे अब पारंपरिक मीडिया के सीमित दृष्टिकोण से बंधे नहीं हैं, बल्कि विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, जैसे कि फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, और यूट्यूब, ने विचारों और विचारधाराओं के आदान–प्रदान को बहुत आसान बना दिया है। ये प्लेटफॉर्म न केवल सूचना का स्रोत हैं, बल्कि चर्चा और बहस के माध्यम भी हैं।

ऑनलाइन समुदाय और ग्रुप्स के माध्यम से, युवा समान विचारधारा वाले लोगों से जुड़ सकते हैं और अपने विचार साझा कर सकते हैं, जिससे उनकी सोच में परिपक्वता और विविधता आती है।

डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने सामाजिक आंदोलनों और जागरूकता अभियानों को एक नई दिशा दी है। डमज्वव, ठसंबा स्पअमे डंजजमत, और पर्यावरण संरक्षण जैसे आंदोलनों ने सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक समर्थन और पहुंच प्राप्त की है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

इन प्लेटफॉर्मों के जरिए युवाओं को सामाजिक मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त करने और सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर मिलता है, जिससे समाज में सकारात्मक बदलाव की प्रक्रिया तेज होती है।

आधुनिक मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने लिंग समानता, जातिगत भेदभाव, और सामाजिक न्याय के मुद्दों को व्यापक रूप से उठाया है। इससे युवा पीढ़ी में इन मुद्दों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ी है।

इन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से, युवा अपने विचारों को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत कर सकते हैं और सामाजिक बदलाव की दिशा में अपनी भूमिका निभा सकते हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने पारंपरिक सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं को चुनौती देने का मंच प्रदान किया है।

निष्कर्ष– इस शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि भारतीय युवाओं की सामाजिक दृष्टि में पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। करियर के प्रति उनकी प्राथमिकता बढ़ी है, और वे अपने पेशेवर लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए परिश्रम कर रहे हैं। हालांकि, इस बदलाव के बावजूद परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति उनकी संवेदनशीलता और जुड़ाव कायम है। युवाओं में पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है, जिसमें वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्व–निर्णय के साथ–साथ पारिवारिक बंधनों और सामाजिक जिम्मेदारियों को भी महत्व देते हैं।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि भारतीय युवाओं का दृष्टिकोण समाज की बदलती संरचना, वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, और आर्थिक अवसरों से प्रभावित हो रहा है। इसके बावजूद, उनकी पहचान पारंपरिक मूल्यों से पूरी तरह विच्छिन्न नहीं हुई है। भारतीय युवा करियर में सफलता की दिशा में अग्रसर होते हुए भी सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने के लिए तैयार हैं, जो यह दर्शाता है कि भारतीय समाज में परिवार और सामुदायिक मूल्य अभी भी गहरे हैं।

संदर्भ सूचीः

1 . अग्रवाल, एस. (2017). भारतीय समाज में युवाओं की बदलती मानसिकता. नई दिल्लीः प्रज्ञान प्रकाशन.

2. बसु, ए. (2019). समाज और युवाः सामाजिक दृष्टिकोण का परिवर्तन. कोलकाताः ज्ञानदीप प्रकाशन.

3. चौहान, आर. (2021). युवाओं की करियर प्राथमिकताएं और उनके सामाजिक प्रभाव. मुंबईः रवींद्र पब्लिकेशन.

4. गुप्ता, पी. (2018). परिवार और करियरः भारतीय युवाओं के दृष्टिकोण का विश्लेषण. नई दिल्लीः शिक्षा प्रकाशन.

5. सिंह, वी. (2020). भारतीय युवाओं की सामाजिक जिम्मेदारियां और उनकी भूमिका. लखनऊः साहित्य भवन.

6. कश्यप, एम. (2017). वैश्वीकरण और भारतीय युवाओं की सोच में परिवर्तन. पटनाः प्रभात पब्लिकेशन.

7. शर्मा, ए. (2019). युवा और परिवारः बदलती पारिवारिक संरचनाएं. जयपुरः राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन.

8. जोशी, के. (2022). युवाओं की उद्यमिता और स्टार्टअप संस्कृति. पुणेः युवाशक्ति पब्लिकेशन.

9. त्रिवेदी, एस. (2021). सोशल मीडिया और युवाओं की सामाजिक दृष्टि. दिल्लीः तकनीकी प्रकाशन.

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

10. पाठक, डी. (2020). शिक्षा और युवाः करियर के प्रति बदलता दृष्टिकोण. वाराणसीः काशी हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन.

11. कुमार, आर. (2018). भारतीय युवाओं की पारिवारिक जिम्मेदारियांः एक अध्ययन. भोपालः म.प्र. साहित्य मंडल.

12. मिश्रा, पी. (2019). युवा और समाजः सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता. रांचीः राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषद्

सिंह, एस. (2021). युवाओं की बदलती मानसिकता और समाज में उनका योगदान. अमृतसरः पायस प्रकाशन.

13. 14. यादव, ए. (2017). भारतीय युवाओं की नई सोचः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. पटनाः बिहार साहित्य अकादमी.

. मौर्य, जे. (2020). लैंगिक समानता और भारतीय युवाओं का दृष्टिकोण. कोच्चिः केरल विश्वविद्यालय प्रकाशन.

15 16. शर्मा, एन. (2022). युवाओं की सामाजिक भागीदारी और पर्यावरण संरक्षण. चंडीगढ़ः पंजाब साहित्य निकेतन.

17. वर्मा, पी. (2019). भारतीय समाज में युवाओं की भूमिका और उनकी सामाजिक जिम्मेदारियां. कानपुरः साहित्य संगम.

18. चौधरी, एस. (2018). युवाओं के सामाजिक दृष्टिकोण का समाज पर प्रभाव. आगराः साहित्य सृजन.

19. कपूर, डी. (2020). आधुनिकता और भारतीय युवाः सोच में परिवर्तन. नई दिल्लीः यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन.

20. राज, ए. (2021). युवा और सामाजिक न्यायः भारतीय संदर्भ में अध्ययन, जयपुरः राजस्थानी प्रकाशन.

21. मेहता, आर. (2019). परिवार, करियर और युवाः एक त्रिकोणीय दृष्टिकोण. मुंबईः पेंगुइन प्रकाशन.

22. शुक्ला, ए. (2020). भारतीय युवाओं की नई प्राथमिकताएंः सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण. दिल्लीः